व माला संख्या ५ Mandal series No. 5

त्रिय-वंश प्रदीप

द्वितीय भाग

तथा

नौमुसलिम जाति निर्णय

प्रथम भाग

त्रिय वंशों की उत्पत्ति व गोत्रादि के विवर्ण के साथ साथ
मुसलमान बादशाहों का उनके प्रति अत्याचार विवशरूप
से नौमुसलिम बने राजपूतों की शुद्ध्यर्थ व्यवस्था

जिसे

त्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा M. R. A. S. तथा पुरातत्व
विशारद, व्याख्यान भूषण व महामन्त्री हिन्दू धर्म
वर्णव्यवस्था मण्डल फुलेरा ने रचा।

यानन्द-यन्त्रालय अजमेर में पं० शिवदयाल द्वारा मुद्रित

म वार २००० | ईस्वी सन १९२८ | मूल्य २॥)

Mandal Series No. 5.

Om Jai Shiv.

KSHATTRIYA VANSH PRADEEP

PART II.

OR.

NAU-MUSLIM-JATI-NIRNAYA.

PART I.

CONTAINS.

Ethnological account of Kshattriya Castes their Customs and Manners before and after their Conversion as Muhammadans, Historical events with Treatment of Muhammadan Kings, quotations of Vedas and Hindu Dharam Shastras for their Purifications and re-admission as Hindus.

Compiled by

Shrotriya Pandit Chhotey Lal Sharma M. R. A. S. London, Research Scholar, Vyakhyan Bhooshan General Secretary Hindu Dharam Varan Vyavastha Mandal Phulera etc.

Author of

Different Six Volumes on Caste Distinction. With all Universal Authorities.

Such as Extracts of Veda, Vedang, Upang, Government Records, Works of European and Civil Indian Officers etc etc. ...

First Edition 2000 Copies } January 1928 { Price Per Copy. Rupees. 2-8-0

विद्यमान है अर्थात् इनमें से अधिकांश लोग गोमांस को देखना तक पाप समझते हैं अन्य मुसल्मानों की झूंठन भी ये लोग नहीं खाते हैं इसलिये शुद्धि के अधिकारी हैं। पंजाब में यह लोग दूकानदारी और हलवाई-गीरी भी करते हैं और हिन्दू जनेऊ भी धारण करते हैं।

६—कहारः—यह भारतवर्ष में एक क्षत्रिय जाति थी आदि उत्पत्ति इस जाति की क्षत्रियत्वता लिये हुये हैं ये लोग पहिले बड़े साहसी व बल पौरुषवाले थे इसही लिये यह जाति भारत के विधर्मी शत्रुओं की आँखों में खटकती थी अतएव इस जाति पर बिपत्तियों का बड़ा पहाड़ टूटा जिसके बोझे से दबकर ये लोग अपनी यथार्थता को भूलगये और निरे एक बेगारी से रहगये उच्चता प्राप्त करने के साधन सब जाते रहे किन्तु सब प्रकार की दासता इनमें आगयी और लोग इनको एक शूद्र जाति समझने लगे पर यह ठीक नहीं हुवा, अन्वेषण करने से पता चलता है कि यह बहुसंख्यक जाति भारतवर्ष में है इसमें अनेकों भेद क्षत्रियों के हैं और दूसरे दूसरे उच्चवर्णीय लोगों के भी हैं तथा कलियुग के प्रभाव से इनमें से कुछ समुदाय की उत्पत्ति उलट पुलट क्रम से पैदा हुई भी है यह सब मिश्रित समुदाय एक कहार जाति में हैं इनमें विशेषांश उच्चवर्णीय जातियों का है पर इनमें विद्या बुद्धि व शिक्षा का अभाव होने से ये लोग सबही तरह के उत्तम मध्यम व निकृष्ट कार्य्य करने लगे कहार जाति में अन्य अन्य जातियें भी मिली हैं यथाः—

Mr. Risley Census Commissioner in his book Tribes and Castes Volume I Page 370.

मिष्टर रिसली साहब कमिश्नर मनुष्य गणना विभाग अपनी पुस्तक "कौम व जाति" जिल्द पहिली के पृष्ठ ३७० में ऐसा लिखते हैं कि "बंगाल में ब्राह्मण, राजपूत, कायस्थ, कुर्मी आदि जातियें भी कहारों में मिलजाती हैं ऐसा करने के लिये कुछ रसूमात करके तथा जाति के मुखिया को जिमनवार देके वह कहार होजाता है" अतएव भारतवर्ष में ऐसा समुदाय भी बहुत है जो पहिले ब्राह्मण व क्षत्रिय वर्ण में थे परन्तु परशुराम जी के भय तथा मुसलमानों के अत्याचार के कारण हजारों ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य कहारों को शतशूद्र नवशायक संज्ञक उत्तम जाति मानकर उनमें सम्मिलित होगये और बहुत से वर्तमान काल में विद्या के अभाव द्वारा कहारवृति करने के लिये अपने निर्वाहार्थ कहारों में शामिल होकर कहार कहाने लगे जिसका फल यह हुआ कि भारत के अकेले युक्त प्रदेश में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के अनुसार ११९१३७९ कहारों की संख्या थी वह ही दस वर्ष पीछे याने सन् १९०१ की मनुष्य गणना में बढ़कर १२३७८८१ होगई। इनमें पुरुष ६३४१२१ और ६०३७६० स्त्रियें हैं इनमें आर्य्य ४९९ हैं जिनमें आर्य्य पुरुष २७३ और आर्य्य स्त्रियें २२६ हैं।

अतएव इस जाति में उच्चवर्णीय समुदाय सम्मिलित होने पर भी ये जाति क्यों उत्तम कर्म करने से वञ्चित रक्खी जांय? कुछ समझ में नहीं आता! क्योंकि यह सरासर अन्याय नहीं तो क्या है? कुविचारों ने देश में चौका लगा दिया इनके संबंध में ऐसा लेख मिलता है कि:—

"वैश्य की स्त्री और तेली के वीर्य्य से दोलवाही कहार जाति उत्पन्न हुई" पृथिवी प्रधानता के नियमानुसार तो यह जाति वैश्य वर्ण में है। पुनः—

ते दोला वाहकाराश्च विशेषाद्व्रत आमिनः ॥ ३३९ ॥
छागला वाहकास्तेस्युः कावड़ी वाहकामताः ।
काहारा इति लोकेऽस्मिन् गर्दभैस्म जीविनः ॥ ३४० ॥
कर्मश्चेदिन्धना नांच तेषां धर्मान् केचनः ।

इति दोलाकारः १ भोई, २ कहार
वर्ण० जा० विं० ३३८, ३३९, ३४०

यद्यपि ये प्रमाण एक नवीन पुस्तिका के हैं और इस पुस्तिका के ऊपर हिन्दू जनता की श्रद्धा भी नहीं है क्योंकि यह कोई ऋषि-प्रणीत पुस्तक नहीं है तथापि यदि इसही प्रमाण को कुछ काल के लिये ठीक मान लिया जाय तब भी इनमें द्विज संसर्ग होने से यह एक छोटी जाति नहीं मानी जानी चाहिये किन्तु हमारे विचार व अन्य अन्य अन्वेषण व विद्वानों के परामर्शानुसार यह जाति उत्तम है और इन्हें द्विजत्व-बोधक कर्म करने का अधिकार है जैसा कि आगे को प्रमाणित किया गया है।

यह द्विजों के यहां पानी भरने वाली जाति है ये लोग आचार में शुद्ध हैं और सम्पूर्ण हिन्दुओं के यहां पानी भरने आदि के कारण इन लोगों नें अपना पूर्व काम मछली पकड़ना आदि छोड़ दिया है इनका धर्म्म वैश्नव व शाक्तिक भी हैं उच्च ब्राह्मण लोग इनके यहां पूजन पाठ आदि काम कराते हैं इसकी पुष्टि में मिस्टर नेस्फील्ड M. A. अपनी पुस्तक के पृष्ठ ९ में ऐसा लिखते हैं कि:—

Many members of water caste has left their original calling of fisherman & boatman.

पानी भरने का काम करने वाले कहारों ने अपना पुराना धन्धा मछली पकड़ने का छोड़ दिया है।

मा० सेन्सेज रिपोर्ट के पृष्ठ ४९९ में लिखा है कि कहार

"कायर" से बना मालूम होता है और कायर का अर्थ नामर्द का है अर्थात् जब पृथ्वीराज चौहान की शाहबुद्दीन गौरी से हार हुयी उस वक्त जिन २ क्षत्रियों ने डर कर हथियार डाल दिये उनको "कायर" कहा गया और कायर का बिगड़ कर अपभ्रंशरूप कहार होगया।

अतएव कहार लोग आदि से क्षत्रियवंशी हैं इनको क्षत्रिय धर्म्म के अनुसार यज्ञोपवीतादि सम्पूर्ण कर्म्म करने चाहियें।

हम कैवर्त प्रकरण में दिखला चुके हैं वहाँ पुराण व स्मृतियों के आधार पर कैवर्त्त जाति की उत्पत्ति तीन भिन्न भिन्न प्रकार से लिखी है अतएव परस्पर विरुद्ध होने से माननीय नहीं हो सकती वरन ऐसा भाव होता है किसी द्वेषीने मनघड़न्त रचना करके स्मृति पुराणों में मिला दिये हैं अतएव ऐसेही वाक्यों से देश में परस्पर ईर्षा, द्वेष व वैमनस्य की वृद्धि होकर भाई भाई का शत्रु बन बैठा अन्यथा कहार जाति का सम्बन्ध ब्राह्मणादि उच्च जातियों के साथ विशेष है क्योंकि सी० एस० मि० विलियम क्रोक कलेक्टर साहब लिखते हैं:—

According to the Brahmanical genealogists the Kahar is one of the mixed castes desecuded from a Brahman father and a Nishad mother.

(C. T. Page. 92.)

ब्राह्मणों की वंशोत्पत्ति के अनुसार कहार एक मिश्रित जाति है जो ब्राह्मण पिता और निषाद द्वारा पैदा हुई है।

अतएव इस प्रमाणानुसार वीर्य्य प्रधानता के नियम को लेने से यह जाति ब्राह्मण वर्णीय ठहरती है और सदैव उच्चतम जातियों के साथ इनका सहवास रहने के कारण इनका रहन-सहन, चाल ढाल, रीति भांति व आचरण ब्राह्मणों के जैसे ही हैं।

भेदः—इस जाति के भेद व उपभेद ये हैं:—

१ बाथम, २ बोट, ३ धीवर (धीमर), ४ धुरिया, ५ घारुक, ६ जैसवार, ७ कामकर, ८ खावर, ९ माहर, १० मल्लाह, ११-रैकवार, १२ रवानी, १३ सिंघाड़िया, १४ तुरहा आदि, बाथम नाम श्रवष्टी नामक शहर के कारण नाम पड़ा, गुड़िया पहिले गौड़ ब्राह्मण थे परन्तु विद्या के अभाव से अपने निर्वाहार्थ कहारों में मिलकर कहारों की सी वृत्ति करने से कहार होगये।

कछवाहा-वंशी क्षत्रिय विपत्तिग्रस्त होकर कहारों में मिल गये जो आजकल ललितपुर के ज़िले में हैं और आजतक कछवाहा कहार कहे जाते हैं।

पँवार-क्षत्रिय भी मुसलमानों के अत्याचार के समय कहारपना करने लगे और तबसे आजतक पँवार कहार कहे जारहे हैं जो जौनपुर के जिले में हैं।

बुलन्दशहर के जिले में तोमर चौहाण और गहलोत राजपूत विपत्ति ग्रस्त होकर कहारों में आमिले तबसे आजतक अपने क्षत्रिय नाम को लिये हुए विद्यमान हैं।

अतएव ऐसे उदाहरण बहुत से दिये जासकते हैं परन्तु ग्रन्थ न बढ़े अतएव सूक्ष्मरूप से यहां दर्शाया है। हमारे इन उदाहरणों से पूर्व कथित मिष्टर रिस्ली कमिश्नर मनुष्य गणना विभाग का लेख भी पुष्ट होता है अतएव निःसन्देह रूपसे ब्राह्मण क्षत्रिय जातियें कहारों में मिलगई इसलिये इनको अपनी २ पूर्व स्थिती को याद करके अपनी वर्त्तमान प्रणाली में सुधार करने की आवश्यकता है पाठक! ये प्रमाण हमने मनुष्य-गणना रिपोर्ट, मि० अटकिन्सन, कलेक्टर सी० एस० मिस्टर विलियम क्रूक, हिमालयन गजेटियर Gazettier 111. 540 आदि आदि के आधार पर लिखे हैं।

मनुष्य-गणना विभाग की रिपोर्ट व अन्य सरकारी कागज़ों से इस कहार जाति के ८२३ उपभेद हिन्दू कहारों के हैं अतएव उन सबके विवर्ण को फिर कभी किसी अन्य ग्रन्थ में लिखेंगे।

भेद मीमांसा

१-बाथम:—संस्कृत में अवष्ठी नामक एक नगर आता है उसही को बाथम कहते हैं इस नगर में इनका राज्य था उस प्रभुत्वता के समय दूसरे दूसरे शहरों में यह समुदाय बाथम कहाता था अब सैकड़ों वर्षों का समय होगया इसलिये यह नाम तो इनके संग अब तक चला आरहा है पर उसकी महत्वता इन कहारों को मालूम नहीं। इनकी लोक संख्या युक्त-प्रदेश के फ़रुक्खाबाद, मैनपुरी, इटावाह, बरेली, बदायूं, शाह-जहांपुर, पीलीभीत, हरदोई और खेड़ी आदि जिलों में बहुत अधिक है, युक्तप्रदेश भर में इनकी लोक संख्या २०१७३८ है।

२-बोट:—यह 'भोट' शुद्ध शब्द का बिगड़कर 'बोट' बनगया है नयपाल का राजा भुटवाल नामक एक क्षत्रिय वीर था जो रघुवंशी था उसही के वंशज भोट व भोटिया कहाते २ आजकल के प्रसिद्ध 'बोट' नाम से कहे व माने जाने लगे यह भी समय के हेरफेर से विपत्तिवश कहारों की तरह निर्वाह करने लगे। युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या २१८८५ है।

३-धीवर:—यह भेद दो शब्दों के संयोग से बना है अर्थात् धी+वरः=धीवरः अर्थात् कहारों में जो समुदाय

बुद्धिमान था वे धीवर कहे जाने लगे, परन्तु मुसल्मानी अत्याचार के समय देश में धर्म विप्लव हुआ और इनकी दशा भी बिगड़ी और ये लोग भी मुसल्मान किये जाने लगे थे बहुत से मुसल्मान होगये और बहुतसे मछली पकड़ने का काम करने लगे जो इनके लिये उपयुक्त कर्म नहीं। परन्तु देशभेद व देशभाषा के कारण ये लोग बुन्देलखण्ड में 'मछमारा' भी कहे जाते हैं आजकल,तो ये लोग कहीं खेती कहीं नौकरी कहीं खजूर के टोकरे पंखे बनाना आदि धन्दे करके निर्बाह करते हैं मि० नेस्फील्ड M. A. आदि विद्वान जैसा हम लिख आये हैं लिखते हैं कि ये लोग इस मछली मारने के काम को छोड़ते जाते हैं। युक्तप्रदेश में इनकी जन संख्या ३६८६५ है।

४-धुरिया:—यह कहार जाति का चौथा भेद है इस भेद के विषय का विवेचन करते हुये विद्वानों ने लिखा है कि:-

"Mahadeo & Paravti were returnig from the house of Himachal etc. etc. etc.

एक समय महादेव व पारबती जी हिमाचल के यहां से बिदा होकर चले आरहे थे पारबतीजी के सिरपर अपना सामान था अतएव महादेवजी उसे थकी हुई देखकर धूल की मुट्ठी से दो मनुष्य पैदा किये तब महादेवजी ने पारबतीजी से कहा कि "अपना सामान इन दो मनुष्यों को देदो जो पीछे २ आरहे हैं" चूंकि ये धूल से पैदा किये गये थे अतएव इनका नाम धुलिया हुआ और धुलिया से धुरिया लोक में प्रसिद्ध होगया उसकी सन्तान आजतक धुरिया कहाती है। यह जाति हमारी सम्मति में उच्च क्षत्रिय वर्ण में मानी जानी चाहिये क्योंकि यह लोग संसारिक व्यवहार के अनुसार विषय करने व नौ महीने

पेट में न रहकर तत्काल पैदा किये जाने से महादेवजी की कृपा से अति पवित्र और उच्च वर्णस्थ निःसन्देह हैं।

The Bihar kahars claim descent from jarasindh king of Magadh. The legend is thus told by General Cunnigham.

(Archieological Report VIII.)

बिहारी कहार मगध के राजा जरासिंध की सन्तान हैं इस की आख्यायिका जेनरल कन्निघाम ने इस तरह पर लिखी है कि "जरासिंध जब कि राजा था उसने गयाजी में गिरियक पहाड़ी पर एक ऊंचा बैठक बनवाया जहां वह बैठता और उसके पैर पचीना के जल में लटका करते थे परन्तु उसके समीप ही भगवान् का बग़ीचा भी था जो कि एक साल के अकाल में सूखकर नष्ट भ्रष्ट होगया। इसपर जरासिंध ने हताश होकर यह निश्चय किया कि "जो कोई इस बग़ीचे को गंगाजी के जल से एक रात में हरा भरा करदे उसे मैं अपनी कन्या व आधा राज्य दे दूंगा।" इसपर चन्द्रावत नामक कहार जाति का एक मुखिया पुरुष खड़ा होगया और झट-पट बानगंगा के पानी का बंध बांधकर मामूली देशी ढंग से टोकरियें भर २ कर बाग़ को सींचने लगा जब बग़ीचा सिंच चुकते देखा तो भगवान अपनी प्रतिज्ञा पर बड़े शङ्कित हुये और अपनी माया से मुर्गे मुर्गी कौवे चिड़िया आदि बुलवाने लगे जिससे कहारों को रात बीत चुकने का सन्देह होगया तब भगवान उनपर तकाज़ा करने लगे कि जल्दी करो प्रातःकाल होगया। मुर्गे व कौवे आदिकों की बोली सुनकर कहार गंगा के किनारे मुकामाह को भगवान के डर से भाग गये कि "रात बीत गयी और काम पूरा नहीं हुआ" दूसरे दिन भगवान ने कहारों को बुलाया कि अपनी २ महनत लेजावें परन्तु वहां कोई नहीं मिले। तब भगवान ने उन्हें मोकामाह से

पीछे बुलाकर हरेक को ३½ साढ़े तीन सेर नाज के हिसाब म-जदूरी दियी तबसे कहार की तनख़्वाह सदा के लिये ३½ सेर नाज प्रति मनुष्य बँधगया अतएव कानून के अनुसार कहार लोग अपनी तनख़्वाह अब भी ३½ साढ़े तीन सेर नाज प्रति मनुष्य के हिसाब से ले सकते हैं। इसही आख्यायिका को कौम और जाति नामक पुस्तक में ठाकुर महादेवप्रसाद सिंह ने भी लिखी है।

५-घारुक:—यह कहार जाति का पाचवां भेद है परन्तु इनके विषय में ऐसा भी लेख मिलता है कि यह लोग हस्तिनापुर में पांडवों की सन्तान थे और काली दुर्गा को पूजा करते थे।

६-जैसवार:—यह कहारों का छठा भेद है, प्राचीन काल में 'जैस' एक बड़ा नगर था जिसको राजा जैसिंह ने बसाया था वहां के वासी जैसवार कहाते थे, मुसलमानी अत्याचार के समय यह लोग राज-पाट विहीन होकर सेवा चाकरी करने में लग गये। युक्तप्रदेश में इनकी जन संख्या ४०१८६ है जिनमें से २५८६६ एक अकेले गोंडे के जिले में हैं।

७-कामकर:—यह शुद्ध 'कर्मकार' शब्द का बिगड़ा हुआ रूप है युक्तप्रदेश के पूर्वी भागों में ये लोग विशेष हैं। लिखा भी है:—

In Basti they claim to be descended from the celebrated Jarasindh king of Magadh.

(C. S. W. C. T. & P. 222.)

भा०—बस्ती के जिले के कामकर लोग मगध के प्रसिद्ध राजा जरासंध के वंशज होने का दावा करते हैं। समय के प्र-भाव से इनकी पूर्ववत् दशा नहीं रही अतः लिखा है कि:—

Their special occupation is acting as demistic servants in the families of Rajas & rich Hindus & they bear a good reputation for activity & fidelity.

भा०—इनका खास काम राजा महाराजा व प्रतिष्ठित गृह-स्थिय के यहां घरेलू कामों की नौकरी करना है और ये लोग अपने काम में तेज और स्वामी भक्ति के लिये प्रसिद्ध हैं, इनमें भक्त लोग भी होते हैं जो मादक द्रव्यों से व अभक्ष्य भक्षण से दूर रहते हैं। इनकी लोक संख्या यू० पी० में ३६६५३ है। ये लोग सबसे अधिक गोरखपुर के जिले में १६५८ हैं।

८—खावर:—यह कहारों का आठवां भेद है इसके विवर्ण का पता नहीं लगा। युक्तप्रदेश में इनकी संख्या ३३०२२ है।

९—माहर:—यह कहार जाति का नवां भेद है 'महाउर' नाम के एक क्षत्रिय राजा हुए हैं जिनका वंश महावर कहाते कहाते माहर व महरा कहाने लगा यह नाम राजपूताना में भी प्रचलित है। इनकी संख्या भारत के एक यू० पी० में १२१०८७ है।

महरा का दूसरा नाम देश भेद के कारण "मेरा" भी है यह कहारों की एक जाति है। एक समय बादशाह शाहबुद्दीन-गौरी का पेट दुखा तो सहज में आराम न हुआ उस समय बहुत से क्षत्रिय जो शाहबुद्दीन की कैद में थे उनमें एक बुद्धिमान क्षत्रिय वैद्यक जानने वाला था उसने बतलाया कि "बादशाह

साहब को बिजोरा खिलाओ" तदनुसार बिजोरा से बादशाह को आराम मालूम हुआ तब बादशाह सलामत ने प्रसन्न होकर उस क्षत्रिय को बुलाकर कहा 'तुम क्या चाहते हो ?' वह बोला हुजूर मेरी जाति के मनुष्य कैद में से छोड़ दिये जायँ यह बादशाह ने स्वीकार किया और हुकुम दिया कि "जिस २ को यह अपना बतलावे वे सब छोड़ दिये जायँ" तब उसने जेलखाने में जाकर जिनको कहा कि यह मेरा, यह मेरा वे वे सब छोड़दिये गये तबसे मेरे व महरे कहाये। इनकी सन्तति बढ़ने के कारण ये लोग देश देशान्तर में फैलगये और महरा व मेरा की एक जाति अलग बनगई पश्चिमोत्तर प्रान्त में ये लोग बहुत हैं ये जाति पालकी व पिंजस उठाने तथा पत्थर घढ़ने व छत बनाने का भी काम करते हैं तथा मारवाड़ में ये लोग कुछ राज के रसोड़ों में भी काम करते हैं जहां ये लोग मांस व मांस के बने पदार्थ तय्यार करते हैं इसको रजवाड़े में "मेरों की तयारी" कहते हैं।

इसही महरा शब्द से अंग्रेजी के ज्ञाताओं ने बहरा कहना आरम्भ कर दिया जो कि अंग्रेजी शब्द Bearer से बिगड़कर हिन्दी भाषा में महरा के स्थान में बहरा होगया जो कि एक कहार जाति का भेद है।

भोइ भी कहार जाति का एक पर्य्यायवाची शब्द है इस भोइ को अंग्रेजीदां लोग अंग्रेजी भाषा में Boy करलिया। यह अंग्रेजी Boy शब्द तैलंग व मलायाम भाषा से बना है क्योंकि तैलंग भाषा में बोवि का अर्थ लड़का Boy है और मलायाम में Boy को बोयि कहते हैं अतएव प्राकृत भाषा का हमारा भोइ शब्द Boy शब्द का अर्थ बोधक है।

१०–मल्लाह:—विद्वानों ने कहार जाति का

दसवां भेद (केवट) लिखा है पर हमने केवट व मल्लाह जाति इस ग्रन्थ में अलग लिखी है तहां देख लेना।

११-रैकवार:—यह कहारों का ११ वां भेद है, यह भेद क्षत्रिय जाति की सूची में लिखा मिला है इसलिये यह लोग किसी समय क्षत्रिय थे ऐसा प्रतीति होता है इनकी आज-कल की स्थिति साधारण है विद्या का इनमें विशेष अभाव है अतएव इनमें कुरीतियों का भी समावेश होगया है इनकी विशेष जन-संख्या हमीरपुर, बांदा, झांसी और ललितपुर आदि जिलों में हैं युक्तप्रदेश में इनकी जन-संख्या २६२३८ है।

१२-रवानी:—यह कहारों का १२ वां भेद है युक्तप्रदेश में इनकी लोक संख्या थोड़ी सी याने ६६७२ है ये लोग यू० पी० के मिर्जापुर और गाजीपुर के जिले में बहुत हैं, ये लोग विशेषरूप से बंगाल बिहार में हैं।

यह कहारों का बारहवां भेद है यह लोग चन्द्रवंशी याने जरासंध वंशी क्षत्रिय थे परन्तु विपत्तिवश छोटे छोटे धन्दों में प्रवृत्त होने से कुछ के कुछ समझे जानेलगे। इनको जाति स्थिति व जाति पद उत्तमहै। इनके विषय में ऐसा लेख मिलता है कि:-

Kahars claimed descent from Jarasindh king of Magadh, and tell an abscured story to count for their name,

Bhagwan it is said, had a beautiful garden on the Giriyak Hill near Rajgir, in Gaya which in a year unusual drought was nearly destroyed. He there fore promised to grant the hand of his daughter and half his kingdom to any one who should water in a

single night. Chandrawat the chief of kahars undertook the task. He built the long embankment called the Asurbandh to bring the water of the Bawanganga to the foot of the hill, and from the reservior thus formed his tribes man watered the Garden with a series of serving lifts (choure). When Bhagwan Saw the work has done he repented of his promise to give his daughter to a man of low degree and cunsed the cock to crow before down, at the same time taunting the kahars with having failed in their under taking. Deceived by this ruse & fearing the Bhagwan would slay them for attempting to win his daughter for their chief, the kahar fled in haste, and when morning broke, not a man was there to claim fulfilment of the promise. Their flight was so hurried that they carried with them the implements used for watering the garden. Those who took the bomboos were called kahars & those who took the ropes were called Maghia Brahman.

अर्थः—कहार अपने को मगध नरेश राजा जरासंध के वंशज होने का दावा करते हैं और कहार कहे जाने के विषय में एक असम्भविक कथा वर्णन करते हैं अर्थात् गयाजी के जिले में राजगृह के निकट गिर्यक पर्वत पर भगवान (मगधदेश का राजा) की एक सुन्दर वाटिका थी जो एक साल अनावृष्टि के कारण नष्ट होगयी थी इसलिये उसने यह प्रतिज्ञा कियी कि जो कोई एक रात में इस बाटिका को गंगाजल से भर देगा उसको यह अपनी कन्या और आधा राज देगा। चन्द्रावत जो

कहारों का मुखिया था उसने इस कार्य्य को पूरा करने का भार अपने ऊपर लिया, बावनगंगा का जल पर्वत के नीचे तक लाने के लिये उसने एक बड़ा भारी बांध जिसका कि नाम "असुर-बध" था बनाया† इस प्रकार यह एक बड़ा तलाब बनाकर उसकी जाति के लोगों ने जलचौरी द्वारा बावनगंगा का जल बाटिका में भर दिया, जब भगवान ने देखा कि कार्य्य पूर्ण हो गया तब अपनी प्रतिज्ञा पर पछताने लगे कि अपनी कन्या नीच श्रेणी के मनुष्य को देना अनुचित है इसलिये भगवान (जरासिंध) ने कृत्रिम मुर्गे से बांग दिवायी और उधर उन कहारों को कार्य्य पूरा न कर सकने की धमकी दी इस धोके में वे डर गये कि भगवान कदाचित मरवा न डालें क्योंकि उन्होंने राज कन्या की प्राप्ति के लिये व्यर्थ प्रयत्न किया इससे डरकर वे सबके सब भागगये और एक भी वहां नहीं रहा और जिसके हाथ में जो सामान था ले भगे अतएव जो बांसों को लेकर भगे थे वे कहार कहाये और जो रस्सी लेकर भगे थे वे मगहिया ब्राह्मण कहाये।

इस कथा को अनेकों विद्वानों ने लिखी है यथाः—

१—मिस्टर विलियम कूक बी० ए० कलक्टर फयजाबाद
२—मेजर जनरल कन्निंघाम, आर्चिलाजीकल सर्वे आफ इन्डिया

तथा मिस्टर बकलर ने Antiquiry of Bengal Journal of Royal Asiatic Society.

ऊपर जो कुछ कहा जाचुका है उसके सम्बन्ध में किसी विद्वान् ने यह विवेचन नहीं किया कि रवानी व रमाणी नाम कैसे पड़ा? इसके विषय में शास्त्रों में 'रमणहार' क्षत्रियों का विवर्ण मिलता है जो जरासंध वंशो थे ये लोग परशुराम जी के

†यह अभी तक विद्यमान हैं जिसे देखना हो गयाजी जाकर देख आवें।

भय से राज्य–बिलासिता को हार चुके थे अर्थात् 'रमण' का अर्थ राज्यसुख भोग तथा 'हार' का अर्थ हारना, अलग रहना आदि होता है अतएव रमण + हार = रमणहार ऐसा रूप हुआ। यह ही रमणहार शब्द 'परसा, परसी और परशुराम' की लोकोक्ति के अनुसार 'रमणी' कहे जाने लगे और फिर यह ही 'रमणी' शब्द रमाणी व रवानी लोक में प्रसिद्ध हुआ।

इस जाति के पास प्रभुत्वता कुछ रही नहीं और ये लोग मुख मलीन दीन हीन निराश्रय होजाने के कारण मुसल्मानी अत्याचार के समय अति पीड़ित हुये उस समय इनके पास बादशाही फौजों में दासता करने के अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय नहीं था इसलिये लोग भी इन्हें व ये भी अपने को कहारों का ही एक भेद समझने व मानने लगे तदनुसार ही विद्वानों ने इन्हें भी कहारों का ही एक भेद लिख मारा है अन्यथा यथार्थ में ये कहार नहीं हैं।

कहारों में विशेषांश क्षत्रियों का ही है पर उनमें कई अन्य जातियों का भी संसर्ग है।

रवानी जाति का गोत्र रमणक ऋषि है वेद यजुर्वेद शाखा माध्यन्दिनी और प्रवर त्रिप्रवर है इन्हें द्विजत्व के अनुसार कर्म करने का अधिकार है। शेष फिर कभी।

१३–सिंघाड़िया:—यह कहार जाति का तेरहवां भेद है यह नाम सिंघाड़े की खेती करने से पड़ गया है हिन्दू जाति में व्रत व उपवासादि में सिंघाड़ों की बड़ी महिमा है अतएव पवित्र वस्तु के व्यवसायी भी पवित्र ही समझे जाते हैं, इस जाति में भगत लोग विशेष हैं, युक्त प्रदेश में इनकी लोक संख्या ३१५७ है।

१४–तुरही:—कहारों के इस भेद के सम्बन्ध में विशेष सम्मतियें क्षत्रियत्व बोधक मिली हैं, इस भेद का आदि पुरुष मच्छुरनाथ व मत्स्येन्द्रनाथ था और इनकी माता का नाम तुल्सी था, ऐसा आगरे वालों के सम्बन्ध में एक सिविलियन अफसर ने भी लिखा है, अन्वेषण से पता चलता है कि यह शब्द तोमर से बिगड़कर बना है अर्थात् तोमर से 'तमराहा' भी कहेजाने लगे और तमराहा से तुरही कहाने लगे, इसके गोत्र इमलिया, अटेलिया, मुंडेरिया, धाड़िया और उमरोनिया।

इनकी युक्तप्रदेश में जन संख्या १०७०७५ है, युक्तप्रदेश के अन्य जिलों की अपेक्षा अकेले एक मुरादाबाद के जिले में बे लोग २४७५९ हैं और बदायूं के जिले में १६५४५ हैं और एटा में १४२६३ हैं।

मा० की जातियों के इतिहास में क्षत्रिय कहारों की खांपें ये हैं:—

१ चौहान	७ साहलोत	१३ अभेराजोत
२ दहिया	८ पावेचा	१४ खेवर
३ हाड़ा	९ मादरेचा	१५ भोर
४ खीची	१० सरखेला	१६ बागड़ेचा
५ देवड़ा	११ सांचोरा	१७ मोयल
६ सोनगरा	१२ पूरबिया	१८ चाहल
१९ चत्ता	२० चाबा	२१ निर्वाण

२२ मोपल और २३ क्यामखानी।

इन खांपों से विदित होता है कि यह जाति क्षत्रियवंश है क्योंकि विपत्तिवश मुसलमानों के अत्याचार से सताये जाकर कदाचित् इन्होंने अपने को कहार महरों में मिला दिया होगा।

इन खांपों में क्यामखानी मुसलमान हैं बाकी सम्पूर्ण शैवी

तथा शाक्तिक भी हैं दारू मांस खाते हैं इनकी स्त्रियें अन्य मजदूरियें भी करती हैं।

राजपूताने में इस जाति को जब तक राज से हाथी दांत का चूड़ा पहिनने का अधिकार न मिले तबतक इनकी स्त्रियें हाथी दांत का चूड़ा नहीं पहिन सकती हैं और ऐसा अधिकार प्राप्त करलेना मानों एक प्रतिष्ठा है जिस प्रकार से सेठानियों के लिये पैर में सोना पहिनना एक बड़ी प्रतिष्ठा का चिन्ह है वैसेही इस जाति के लिये हाथी दांत का चूड़ा है। इस प्रतिष्ठित प्राचीन लेख से प्रमाणित होता है कि कहार जाति निःसन्देहरूप से क्षत्रिय वर्ण में हैं।

राजपूताने में कहारों के तीन मुख्य भेद ये हैं।

१ पूरविये २ ढूंढाड़े और मारवाड़ी

इन तीनों में परस्पर शादी व्यवहार होते हैं पर कोई छोटी मोटी बातों में तनिक सा भेद भी है यथाः—

पूरविये और ढूंढाड़े कहार तो झूंठे बर्तन मांज लेते हैं और धोती भी धोते हैं परन्तु घोड़े की सईसी नहीं करते इसके विरुद्ध मारवाड़ी ऐसा करते भी हैं और नहीं भी करते हैं परन्तु मछली आदि नहीं पकड़ते।

पूर्व के कहारों का एक भेद 'भोई' भी है ये लोग पालकी उठाने में बड़े प्रवीण व बहादुर समझे जाते हैं ये लोग पालकी पीनस तो उठा लेते हैं पर नाज उठाना बुरा समझते हैं मारवाड़ी महरों की स्त्रियें हाथी दांत का चूड़ा पहिनती हैं परन्तु पूरबिये व ढूंढाड़ो की नहीं पहिनती।

पूरविये कहार महरा तथा मारवाड़ी कहार मेरा कहाते हैं। सन् १९०१ की मनुष्यगणना के अनुसार युक्त प्रदेश में कहारों की संख्या १२३७८८१ है जिसमें पुरुष ६३४१२१ और स्त्रियें ६०३७६० हैं।

आर्य्य समाजी कुल कहार ४९९ हैं जिसमें पुरुष २७३ और और स्त्रियें २२६ हैं।

मारवाड़ में कुल कहार ३०९५ हैं जिसमें पुरुष १७६० और स्त्रियें १३३१ हैं।

कहारों के अधिकार सम्बन्ध में ऐसे बचन मिलते हैं कि:-

शूद्र कन्या समुत्पन्नो ब्राह्मणेनतु संस्कृतः।
संस्कृतस्तु भवेद्दासो ह्यसंस्कारैस्तु नापितः॥
प० धर्मशा० ११-२३

इस धर्मशास्त्र की आज्ञानुसार कहार जाति वह जाति है जो ब्राह्मणों द्वारा संस्कार युक्त थी अतएव सिद्ध होता है कि कहार जाति को १६ संस्कार कर सकने का अधिकार है और इसलिये यह जाति द्विज संज्ञक है।

देश भेद व इनके कामों के कारण इनकी जाति स्थिति व जातिपद सर्वत्र एकसा नहीं हैं कहीं उत्तम, कहीं उत्तमतम और कही निकृष्ट तथा कहीं निकृष्टतम समझा जाता है, इस जाति के हाथ का प्राचीन काल में जलभी नहीं पीया जाता था परन्तु जैसा हम कैवर्त प्रकरण में पुराणों की आख्यायिका लिख आये हैं तदनुसार महाराज बल्लालसैन ने इस जाति का स्पर्श-दोष दूर करके इसको पवित्र किया और श्रीरामचन्द्रजी महाराज ने अपने चरणारविन्द छुवाकर इस जाति को स्वर्गधाम में पहुंचा दिया तबसे भारतवर्ष की उत्तमोत्तम कोटि की उच्च जातियों ने इनके साथ स्पर्श ही नहीं किया वरन् इनके हाथ का जल व पक्की रसोई ग्रहण करने की पृथा सर्वत्र देश व्यापी होगयी अतएव निष्पक्ष भाव से विचार करने से यह जाति पवित्र जाति मानी जानी चाहिये।

इस जाति की उच्चता विषय तो इतना कहना ही पर्याप्त है कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण तक इनके हाथ का जल पीते व रसोई का आटा तक गुँदवा लेते हैं।

धन्दा

इस जाति के धन्दे की स्थिति सर्वत्र एकसी नही है किन्तु कहीं कहीं तो ये लोग डोली व पालकी उठाते हैं, कहीं सिंघाड़ा, खरबूजा और तरबूज तथा ककड़ी की खेती करते हैं, कहीं नाव चलाते हैं और मल्लाह कहाते हैं, कहीं मच्छी पकड़कर बेचते हैं, कहीं उच्च घरों में चौका बर्त्तन व पानी भरने आदि का काम करते हैं, कहीं बँगी उठाते हैं, कहीं हलवाईगीरी करते हैं, कहीं गृहस्थियों के यहां बाहिर भीतर के कामों के लिये नौकरी करते हैं, कहीं चपड़ासी गिरी व कहीं बाबूगीरी भी करते हैं तात्पर्य यह कि कहीं कुछ और कहीं कुछ करते रहते हैं हमने कानपुर आदि अनेकों शहरों में देखा है कि यह जाति अपने २ घरों पर भी बड़ी पवित्रता से रहती है टट्टी जाकर स्नान करती है अपनी धोती आदि हरेक किसी से नहीं छुआती है ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यों के अतिरिक्त किसी की कच्ची रसोई नहीं जीमते हैं।

दक्षिण में इस जाति की स्थिति अच्छी नहीं मानी जाती है वहां की प्रथा के अनुकूल मिष्टर स्टील अपनी पुस्तक के पृष्ठ ११२ में इस जाति को शूद्रों से नीचे लिखी है।

इस जाति की लोक संख्या सहारनपुर, मुजफ्फ़रनगर, मेरठ, बदायूं, बस्ती आज़मगढ़ और गोंडा आदि जिलों में अनुमान ५० हजार के है और युक्त प्रदेश के सम्पूर्ण जिलों से अधिक गोरखपुर के जिले में है जहां अनुमान ७५ हजार लोक संख्या है।

जिलेवार भेद

मिर्जापुरः-१ तुराह २ बथवा ३ धुरिया ४ धीमर ५ रवानी व रमानी ६ खारवार व खारवाड़ा ७ जैसवार, मल्लाह व रैकवार राजपूतों के उपभेद हैं।

बिजनौरः—धनोर कहार हैं इनके ५ उपभेदः—

१ नराई २ पछाये ३ गोले ४ खागी और ५ धनोर।

झांसी के जिले में रैकवार, बथमा, धुरिया, गुड़िया, गोरिया, मल्लाह और तुराई, इनके गोत्र इमिलिया, अटेरिया, गुंडेरिया, दहाड़िया और दमरौनिया।

ललितपुर के जिले में गुड़िया, धुरिया, मलावी और गोठिया या गोतिया।

बरेली के जिले में तुरई व तुरैया, बथमा, गोड़िया या गुड़िया, धुरिया, थानेसरा, महावर, बोत, कीर, खद्वाड़ा और चांदेड़।

देहरादून के जिले में जालिया आदि आदि।

सहारनपुर के जिले में देसवाली, धानचक, गुड़वाल और मखनपुरिया व मकनपुरिया।

बुलन्दशहर के जिले में बल्लाई, चौहाण, गहलौत, मकनपुरिया, नोईवान, रोनीडा, सरमोढना और तोमर इनमें चौहाण गहलोत और तोमर ये तो प्रत्यक्ष रूप से ही राजपूत हैं परन्तु देश में अशान्ति के समय कहारों में मिलकर अपनी जीव रक्षा कियी थी।

अलीगढ़ के जिले में भीरगुडी और रावत

आगरे के जिले में मथुरिया।

फरुक्खाबाद के जिले में भरसिया आदि।

मैनपुरी के जिले में खागी, मथुरिया, मटियाबाड़ और पछारे

बरेली के जिले मे बोडले और खागी आदि

मुरादाबाद के जिले मे खागी, पछारे आदि

शाहजहांपुर के जिले मे सनौटिया आदि

कानपुर के जिले मे निखाद व निषाद आदि

झांसी के जिले मे जुड़िया और खरे आदि

ललितपुर के जिले मे कछवाहा आदि

बनारस के जिले मे कन्नौजिया आदि

जौनपुर के जिले मे पँवार और सकत आदि

गाजीपुर के जिले मे हरदीहा आदि

बस्ती जिले मे दखिनाहा और सरोरिहा आदि

आज़मगढ़ के जिले मे गोंड व कन्नौजिया आदि

लखनेउ के जिले मे भोन्ड, निखाद व निषाद आदि

रायबरेली के जिले मे भोन्ड, दीन, घटवाड़िया, जेठवंत, निखाद, रौतिया आदि

हरदोई के जिले मे गुरुनाथ और जेठवंत

बहराइच के जिले में जेठवंत खारमोढ़ा, लुनिया, मेढ़, निखाद और तुरकिया आदि

सुलतानपुर के जिले में दतिया व दुतिया, लखौना, निखाद और परकौता आदि

पर्ताबगढ़ के जिले मे पासी केवट आदि आदि

बाराहबंकी मे भोंड, खारमोना, मोढ़, नाथू और निखाद आदि ।

युक्तप्रदेश में कहारों की लोक संख्या.

(सन १८९१ के अनुसार)

नाम जिला	हिन्दूकहार	नौमुस्लिमकहार	जोड़
देहरादून	३५६८	८	३५७६
सहारनपुर	४५४४२	०	४५४४२
मुज़फ्फ़र नगर	४६९५६	३७	४६९९३
मेरठ	४२९६१	०	४२९६१
बुलन्दशहर	१८२७२	४	१८२७६
अलीगढ़	२६२१२	०	२६२१२
मथुरा	५५२८	०	५५२८
आगरा	१०१४३	०	१०१४३
फरुख़ाबाद	२९३५१	०	२९३५१
मैनपुरी	२३५२१	०	२३५२१
इटावा	१६०६९	०	१६०६९
एटा	२१३७९	०	२१३७९
बरेली	५१७२२	०	५१७२२
बिजनौर	१७४४७	२८४१	२०२८८
बदायूं	४०१९९	०	४०१९९
मुरादाबाद	३३९१७	६०१	३४५१८
शाहजहांपुर	४००४४	०	४००४४
पीलीभीत	१६३३४	०	१६३३४
कानपुर	२०८२२	०	२०८२२
फतेपुर	३८७४	०	३८०४
बांदा	११४०८	०	११४०८
हमीरपुर	११६२०	०	११६२०
इलाहाबाद	७१६०९	७५	१७६८४
झांसी	१०७३४	०	१०७३४
जालोन	३७२२	०	३७२२
ललितपुर	६८६६	०	६८६६
बनारस	१४४२१	१००	१५५२१

युक्तप्रदेश में कहारोंकी लोकसंख्या ई० सन् १८९१

नाम जिला	हिन्दू कहार	नौमुस्लिमकहार	जोड़
मिर्जापुर	२००९०	०	२००९०
जौनपुर	२७१४४	३५८	२७५५२
गाजीपुर	२१८८०	०	२१८८०
बलिया	२१२२६	०	२१२२६
गोरखपुर	७२५१७	५	७२५२२
बस्ती	४६३२५	७०५	४७०३०
आजमगढ़	४१०१२	३५८	४१३७०
गढ़वाल	२०९५	०	२०९५
तराई	५४७३	४१४	५८८७
लखनऊ	१७६७५	५१८	१८१९३
उन्नाव	११७०३	०	११७०३
रायबरेला	११८८८	२२	११९१०
सीतापुर	३३०३६	४६	३३०८२
हरदोई	२८८०१	०	२८८०१
खेड़ी	३४४७७	०	३४४७७
फैजाबाद	३७३७२	२८	३७४००
गोंडा	५५३८८	७२	५५४६०
बहराइच	४७७१७	१२१	४७८३८
सुलतानपुर	२८२१८	४६०	२८६७८
प्रतापगढ़	१०८६१	१२३	१०९८४
बाराबंकी	२२६७०	१०	२२६८०
जोड़—	११८४४५१	६९२८	११९१३७९

नोट.—जिन जिलों में १०० से कम की लोक संख्या थी उन्हे हमने छो दिये हैं।

ईस्वी सन १९०१ के अनुसार युक्तप्रदेश में कहारों की लोक संख्मह १२३७८८१ है।

राजपूताना प्रान्तगत जोधपुर राज्य इनकीसंख्या ३०९५ है

युक्तप्रदेश में इन नौमुस्लिम कहारों के आचार विचार व रहन सहन के ढंग को देखने से निश्चय होता है कि इनमें कई रीतियें हिन्दुवानी हैं यदि देशहितैषी हिन्दू समुदाय इनकी स्थिती व सुधार का उद्योग करे तो देश को बड़ा लाभ हो।

इस जाति में दो एक मनुष्य बड़े चालाक व अपने नामों के आगे पीछे बड़े बड़े Titles पदवियें लगाये हुये इस भोली-भाली जाति को ठगते फिरते हैं क्योंकि इस जाति में विद्या का अभाव है अतएव वे चलते पुरजे लोग अपने को महात्मा, आचार्य व पंडित आदि आदि बतलाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं उनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।

१५-कीर:—यह एक हिन्दू कहारों की ही जाति का भेद है। ये लोग राजपूताना व मध्यप्रदेश में विशेष हैं जिस प्रकार कहारों में क्षत्रियत्व दर्शता है तैसेही इस जाति में भी कई चिन्ह क्षत्रियत्व बोधक विद्यमान हैं। अजमेर मेरवाड़ा के नसीराबाद तथा जोधपुर राज्य के जेतारण, मारोठ नावां और बीलाड़ा के पर्गने में ये विशेष हैं।

ये पहिले राजपूत थे परन्तु जब बादशाही जुल्म बढ़े और बादशाह अलाउद्दीन खिलजी के समय जब राजपूत जबर्दस्ती मुसल्मान किये जाते थे और जो मुसल्मान न होते थे उनके मुंह में थूका जाता था, मैला भरवा दिया जाता था और यहही नहीं गोमांस तक उनके मुंह में ठूंस दिया जाता था तिसपर भी जो मुसल्मान होने को राजी न होते थे कतल कर दिये जाते थे ऐसी दशा में हजारों राजपूत कतल होगये और हजारों इधर उधर भागकर टोकरी, पंखे, चटाई, चौके आदि आदि बनाने लगे और खरबूजे, ककड़ी, सिंघाड़ा, तरबूज, मतीरे आदि आदि

की खेती करने लगे और इस प्रकार के धन्दों में प्रवृत होकर इस जाति ने अपने धर्म व प्राण रक्षा किथी थी।

इनमें कन्नोजिया, आक, सारकाण, नमचोलिया, राठौर, सीसोदिया, चौहाण, भाटी और सोलंकी आदि आदि हैं जिनके होने से स्पष्टतया ये क्षत्रिय निश्चित होते हैं।

राजपूताने में इस जाति की लोक संख्या २१६४८ है उच्च जाति के ब्राह्मण लोग इनके यहां की भिखाई करते देखे गये हैं। इनमें नौमुस्लिम ११७७ हैं इनकी व अन्य कहारों की खांपें एकसी मिलती हैं।

७ क्यामखानी:—यह लोग यथार्थमें पहिले चौहाण राजपूत थे। तंवरों के राज्य के पश्चात् जब इन चौहान राजपूतों के दौर दौरे दिल्ली आदि आदि स्थाना में हुए तब वीर शिरोमणि पृथिवीराज चौहान सरीखे सम्राट मुसल- मान बादशाहों की आंखों में खटकने लगे और इसही कारण से चौहानवंश व अन्य राजपूतगण लाखों की संख्या में ज़बरदस्ती मुसलमान कर लिये गये।

क्यामखानियों का आदि पुरुष मारवाड़ प्रदेशस्थ ददरेरे गांव के चौहान ठाकुर करमसिंह का बेटा मोटीराव था, उस समय दिल्ली के तख़्त पर तुग़लक़ खानदान का राज्य था संवत् १४४० में बादशाह फ़ीरोज़शाह तुगलक का एक उच्च पदस्थ ओहदेदार सैयद नीसिर था उसके कोई सन्तान नहीं थी, उसने मोटीराव को एक होनहार लड़का समझ कर उसके माता पिताओं पर दबाव डालकर उसको अपने पास रखलिया और

गोंड़ा	४०६	३५२	७५८
बहराइच	१०८	२७१	।३७६
सुलतानपुर	८०१६	४६०७	१२६२३
परतावगढ़	४६	१७	६६
बाराबंकी	३२६	७३५	१०६४
जोड़	१७३२०	१२६७०	२६६६०

५४—भिश्ती

यह एक मुसलमान जाति है, जिस प्रकार हिन्दुओं के यहां कहार, महरे जलादि की सेवा करते हैं, तदनुसार मुसलमानों में भिश्ती। असल में ये लोग सक्का कहाते थे जो अरबी के सक्के शब्द से बना है, जिसका कि अर्थ पीने का पानी देने वाले के हैं। परन्तु इन लोगों ने अपना बड़प्पन का नाम भिश्ती इस कारण से रक्खा है, कि जिससे इनकी प्रतिष्ठा बढ़े। 'वहिश्त' फारसी में बड़े सुख को कहते हैं और जो इस सुख को भोगे, वो वहिश्ती वहिश्ती कहाते कहाते आज कल का प्रचलित शब्द भिश्ती हो गया। सक्का एक छोटे से नाम से

जोधपुर में मुसलमान भिश्ती स्त्री पुरुष सब मिला कर क़रीब एक हजार के हैं। राजपूताने में भिश्ती लोगों की औरतें हिन्दू औरतों की तरह घाघरे लूगड़ी भी पहनती हैं। राजपूताने में सक्कों की खांपें परिहार, चौहान और भाटी वग़ैरः हैं अपने लड़के लड़कियों का सम्बन्ध करते समय ये लोग गोत (गोत्र) नात भी टालते हैं। ये लोग मश्क को बड़ी प्रतिष्ठा करते हैं खाली मश्क लिये हुये कभी पेशाब नहीं करते इसी तरह ये लोग तस्मे का भी बहुत ख्याल रखते हैं कमर पर एक लाल कपड़ा बांधे रहते हैं जिससे पानी भरी मश्क कमर पर रक्खी हुई नापाक पाजामे से न छूने पावे।

सक्का ओछी बोली है, भिश्ती और जमादार इनके लिये एक प्रतिष्ठित नाम हैं। राजपूताना प्रदेशान्तर्गत मारवाड़ प्रदेश में मश्क और पखाल का पानी बड़ी बड़ी हिन्दू जातियां पीती हैं।

अर्थात् भिश्ती लोग मश्क व पखाल द्वारा पानी लाते हैं और हिन्दू लोग अपने मटके और कलशों को नीचे रख देते हैं भिश्ती लोग अपने मश्क व पखाल का मुंह खोल कर ऊंचे से उनमें पानी भर देते हैं। जैसा कि आजकल नलों में से पानी भर लिया जाता है। वहां ये चर्म जल कहलाता है। हिंदू कहार व अन्य हिंदू जातियें जो पीतल लोहे के डोल रस्सी आदि द्वारा कुओं से खेंच कर पानी लाते हैं वह ब्रह्म जल कहाता है परंतु मारवाड़ में विशेष रूप से चर्म जल का ही प्रचार है।

प्यारे हिंदुओ! ज़रा सोचो और श्री कृष्णचन्द्र भगवान को हृदय में स्मर्ण करके ज़रा विचारो तो सही कि आप लोग गोरक्त-रञ्जित यवनों के हाथ के छूये जल को तो बड़ी प्रसन्नता